माँ मैहर आरती

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी।
कोई तेरा पार ना पाया॥

पान सुपारी ध्वजा नारियल।
ले तेरी भेंट चढ़ाया॥

सुवा चोली तेरी अंग विराजे।
केसर तिलक लगाया॥

नंगे पग मां अकबर आया।
सोने का छत्र चढ़ाया॥

ऊंचे पर्वत बनयो देवालया।
नीचे शहर बसाया॥

सतयुग, द्वापर, त्रेता मध्ये।
कलियुग राज सवाया॥

धूप दीप नैवेद्य आरती।
मोहन भोग लगाया॥

ध्यानू भगत मैया तेरे गुन गाया।
मनवांछित फल पाया॥

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी।
कोई तेरा पार ना पाया॥

1

---

[1] सौजन्य से:

धर्मयात्रा **(DharmYaatra)**

वेबसाइट: https://dharmyaatra.in/

व्हाट्सऐप नंबर: +917410957600

नोट: यदि आप वैदिक ज्ञान 🔱, धार्मिक कथाएं 🕉️, मंदिर व ऐतिहासिक स्थल 🛕, भारतीय इतिहास, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य 🧠, योग व प्राणायाम 🧘‍♂️, घरेलू नुस्खे 🥥, धर्म समाचार 📰, शिक्षा व सुविचार 👣, पर्व व उत्सव 🪔, राशिफल 🌌 तथा सनातन धर्म की अन्य धर्म शाखाएं ☸️ (जैन, बौद्ध व सिख) इत्यादि विषयों के बारे में प्रतिदिन कुछ ना कुछ जानना चाहते हैं तो आपको धर्मयात्रा संस्था के विभिन्न सोशल मीडिया खातों से जुड़ना चाहिए। उनके लिंक हैं:

व्हाट्सएप ग्रुप व्हाट्सएप चैनल

फेसबुक पेज इंस्टाग्राम प्रोफाइल